

2163. = PRASAṄGĀBH. 7, a. b. मतः st. घृत्यः. c. संगवशोपज्ञातिमुखतः स्वांतस्फुरन्निर्मल.
2168. = KĀN. 86 bei WEBER. c. ग्रण्ये.
2170. = KĀN. 17 bei WEBER. VṚDDHA-KĀN. 2, 11. An der zweiten Stelle lautet der Spruch: माता वैरी पिता शत्रुर्बालो येन न पाद्यते । सभामध्ये न शोभन्ते हंसमध्ये वका यथा ॥
2173. = VṚDDHA-KĀN. 12, 14. a. परदारंश्च. b. ऽद्रव्याणि लोष्ठवत्. c. ऽभूतानि. d. पश्यति st. पण्डितः.
2175. d. Bei BURNOUF विधासम् st. विद्वासम् gedruckt.
2177. BHARTṚ. 4, 18 lith. Ausg. III. c. नितम्बा.
2183. = PRASAṄGĀBH. 10, a. b. मते st. गते und नष्टे st. धष्टे.
2192. = PRASAṄGĀBH. 14, a. d. एव st. एष und आगमः st. आगतः.
2193. Vgl. Spruch 3640.
2196. d. सः st. हि Comm.
2197. = KAVITĀMṚTAK. 48. b. गुणैर् st. शमैर्. d. वशं, nicht वशे.
2205. Schalte nach *Verständiger* ein: wenn das Unglück da ist.
2214. ÇATAKĀV. 63. मुग्धे धनुष्मती का त्वमपूर्वव विलोक्यसे । यथा नो हंसि चेतांसि u. s. w.
2223. Vgl. Spruch 4737.
2226. Lies *Noth* st. *Unruhe*.
2227. fg. = KAVITĀMṚTAK. 78. fg. 2227, b. वाक्यं प्रभाप्रभं. c. वचो st. वाक्यम्. 2228, b. वाक्यं प्रभाप्रभं. BÖRTL. — 2228. In den Anmm. ist statt NĀG. ĠAN. Çl. 14 zu lesen RAY. Çl. 4. SCHIEFNER.
2233. = KĀM. NĪTIS. 3, 13. Hier lautet die erste Hälfte: जगन्मृगतृपातुल्यं वीक्ष्येदं नणभङ्गुरम्. c. Statt स्वज्ञनैः संगतः des Textes lesen die Scholien richtig मुञ्जनैः संगतं.
2234. BHARTṚ. 2, 60 lith. Ausg. III. c. टीवर st. धीवर.
2245. ÇATAKĀV. 110. b. स्वीयीकृत्य st. भागीकृत्य.
2253. = PRASAṄGĀBH. 16, b. d. दुर्भेद्यः सौख्यसंधानः.
2265. Vgl. auch den Schluss von Spruch 4932.
2279. ÇATAKĀV. 33. d. सत्सु st. सत्पे; मार्गस्थितिः.
2282. Auch nach KĀM. NĪTIS. 1, 36 eingeschoben. a. पृथिव्या. d. तस्मादतितृपं त्यजेत्.
2292. Vgl. MBH. 5, 1440, b. 1441, a: यत्र स्त्री यत्र कितवो बालो यत्रानुशासिता । मज्जति ते ऽवशा राजन्नयामश्मप्लवा इव ॥
2305. c. d. सिध्यते पुष्यते चैव यथा पुष्यप्रदा लता Comm. zu KĀM. NĪTIS.
2312. Auch MBH. 13, 365, b. 366, a (c. एवं पूर्वकृतं. d. अनुगच्छति). VṚDDHA-KĀN. 13, 15 (b. गच्छति st. विन्दति. c. यथा यच्च कृतं. d. अनुगच्छति).